

---

# Arya Panchadashi Stotram

---

## आर्यापञ्चदशीस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Aryapanchadashistotra

File name : aaryaa15.itx

Category : devii, otherforms, stotra, tyAgarAja, devI, panchadashI

Location : doc\_devii

Author : Tyagaraja

Transliterated by : Sridhar Seshagiri seshagir at egr.msu.edu

Proofread by : Sridhar Seshagiri seshagir at egr.msu.edu

Description-comments : Hymn of 15+1 verses in praise of Devi

Latest update : December 27, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 27, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

आर्यापञ्चदशीस्तोत्रम्



श्रीगणेशाय नमः ।

ॐ क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं श्रीं ।

करकलितचापबाणां कल्हाराङ्घ्रिं नमामि कल्याणीम् ।

कन्दर्पदर्पजननीं कलुषहरां कामितार्थफलदात्रीम् ॥ १ ॥

एषा स्तोतुम् वाणी नैव समर्था तवेशि महिमानम् ।

शेषोऽप्यब्दसहस्रैः शेषं कृतवान् महेशि तव चरितम् ॥ २ ॥

ईशित्वादिसुपूज्यामिन्दिन्दिरकेशाभारसूलसिताम् ।

इन्दीवरदलनयनामीप्सितदात्रीं नमामि शर्वाणीम् ॥ ३ ॥

लसदरुणभानुकोटिद्युतिनिधिमम्बां सुरेन्द्रलक्ष्यपदाम् ।

ललितां नमामि बाले ललितशिवहृदयकमलकलहंसीम् ॥ ४ ॥

हींकारबीजरूपे हिमगिरिकन्ये हरीन्द्रभववन्द्ये ।

हिमकरधवलच्छत्रे हिताय भव नः सदा महाराज्ञि ॥ ५ ॥

हर्षोत्करजनयित्री हसितज्योत्स्ना तवेयमनवद्ये ।

हरगलहालाहलमपि हरति त्रैलोक्यमोहतिमिरं ते ॥ ६ ॥

सकलमनोरथदाने सत्यपि चरणे नतस्य तव निपुणे ।

संसेव्यते सुरतरुः सदाज्ञालोकैर्नु कृच्छ्रफलदाता ॥ ७ ॥

कनकरुचे चटुलगते कठिनस्तनभारनम्रकृशमध्ये ।

कान्ते कङ्कणहस्ते कम्बुग्रीवे नमोऽस्तु ते करुणे ॥ ८ ॥

हरनयनानन्दकरे हराङ्कसंस्थे हरिप्रमुखवन्द्ये ।

हरनटनसाक्षिभूते हरार्धदेहे नमोऽस्तु ते सुकृपे ॥ ९ ॥


लक्ष्मीप्रदकरुणा या लक्ष्मीपतिमल्पमम्ब कर्तुमलम् ।

लक्ष्यम् कुरु मां तस्या लावण्यामृततरङ्गमाले त्वम् ॥ १० ॥


हींकाररत्नगर्भे हेमाचलमन्दरस्तनोल्लसिते ।  
हेरम्बप्रियजननि हे वसुधे देहि मे क्षमां नित्यम् ॥ ११ ॥  
सत्सम्प्रदायविदिते सकलागमनिगमसारतत्त्वमयि ।  
सावित्र्यर्पय वदने सकलरसाश्रयसुवाक्सुधाधाराम् ॥ १२ ॥  
करकङ्कणमणिदिनमणिकरविकसितचरणकमलमकरन्दम् ।  
करुणापयोनिधे मे कामाक्षि स्वान्तषट्पदः पिबतु ॥ १३ ॥  
लसदिक्षुचापसुमशरलक्षितदोर्वल्लिवीर्यमभयेन ।  
लक्षाधिकदैत्यकुलं लवुपटवासं कृतं कथं चित्रम् ॥ १४ ॥  
हींकारकेलिभवने हिमकरमौल्यङ्कमञ्जुपर्यङ्के ।  
हृदयसरोजे मे वस हृदयानन्दप्रबोधपरहंसि ॥ १५ ॥  
आर्यापञ्चदशीं तामार्या यो भजति शुद्धधीर्नित्यम् ।  
भार्ये लक्ष्मीवाण्यौ पर्यातात् तस्य सादरं भवतः ॥ १६ ॥  
इत्यानन्दनाथपादपद्मोपजीविना काश्यपगोत्रोत्पन्नेनान्ध्रेण  
त्यागराजनान्ना विरचितमार्यापञ्चदशीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Sridhar Seshagiri seshagir at egr.msu.edu

---

——  
*Arya Panchadashi Stotram*

pdf was typeset on December 27, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

